B.A.; PART-I
POLITICAL SCIENCE
PAPER-1: BASIC PRINCIPLES OF POLITICAL THEORY
CH-9 (THE CONCEPT OF LIBERTY)
LECTURE NO.- 22 (TWENTY TWO)
DATE: 06/05/2020

BY: OM KUMAR SINGH
ASSISTANT PROFESSOR
DEPTT. OF POL. SCIENCE
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR
LNMU, DARBHANGA

LIBERTY
स्वतंत्रता

स्वतंत्रता की अवधारणा का विकास—

इसका विकास मध्य युग में हुआ। प्रारंभ में धर्म और समाज के खिलाफ स्वतंत्रता की माँग की गई तथा कहा गया कि समाज और धर्म व्यक्ति को पूर्णतः अपने अधीन नहीं रख सकता।

15 वीं और 16 वीं सदी में 'स्वतंत्रता' का तात्पर्य, राजतंत्र के खिलाफ स्वतंत्रता थी। अर्थात् राजा या राजसत्ता लोगों के जीवन और विचारों को पूर्णतः नियंत्रित नहीं कर सकता।

17 वीं सदी के बाद 'स्वतंत्रता' बहुमत तथा सरकार के विरोध में प्रकट हुई। इसमें यह माना गया कि बहुमत तथा सरकार लोगों के विचारों को नियंत्रित नहीं कर सकते। विचार एवं तर्क करने की स्वतंत्रता लोगों में अंतर्निहित है।

1789 ई० की फ्रांसीसी क्रांति ने स्वतंत्रता की अवधारणा को और मजबूती प्रदान की। इस क्रांति ने विश्व के अनेक देशों में स्वतंत्रता के लिए ललक पैदा की। आज अनेक देश स्वतंत्र हैं और

Scanned with CamScanner

Date: _____ Page: _____

वहाँ प्रजातंत्र की स्थापना हो चुकी है। इन प्रजातांत्रिक देशों अपने संविधान के माध्यम से अपनी जनता को स्वतंत्रता के अधिकार प्रदान किए हैं।

स्वतंत्रता का महत्व :
Importance of Liberty

मानव के सर्वांगीण विकास के लिए अनेक अधिकारों का होना अत्यन्त ही आवश्यक होता है, उनमें स्वतंत्रता का स्थान सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। स्वतंत्रता के अधिकार के बिना अन्य सभी अधिकार बेमानी है अर्थात् स्वतंत्रता के साथ समायोजित हो कर ही अन्य अधिकार पूर्णता को प्राप्त करते हैं।

बर्ट्रेण्ड रसैल एवं मैजिनी के कथनों से स्वतंत्रता के महत्व को स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है, जो इस प्रकार है—

बर्ट्रेण्ड रसैल का कथन,

"स्वतंत्रता की इच्छा व्यक्ति की एक स्वभाविक प्रवृत्ति है और इसी आधार पर सामाजिक जीवन का निर्माण सम्भव है।"

मैजिनी का कथन,

"स्वतंत्रता के अभाव में आप अपना कोई कर्तव्य पूरा नहीं कर सकते हैं। अतएव आपको स्वतंत्रता का अधिकार दिया जाता है और जो भी शक्ति आपको इस अधिकार से वंचित रखना चाहती हो, उससे जैसे भी बने, अपनी स्वतंत्रता छीन लेना आपका कर्तव्य है।"

Scanned with CamScanner

Date: ________ Page: _____

स्वतंत्रता का अर्थ एवं परिभाषा :

प्रत्येक मनुष्य अपनी इच्छानुसार स्वतंत्रता के अलग - अलग अर्थ निकालते हैं। सामान्य मनुष्य स्वतंत्रता का अर्थ मनमानी करने से या बिना किसी दूसरे मनुष्य के हस्तक्षेप के अपनी इच्छानुसार कार्य करने से लगा लेते हैं। स्वतंत्र विचारक स्वतंत्रता का अर्थ प्राचीन परम्पराओं एवं बंधनों से मुक्त होने से लगा लेते हैं।

आध्यात्मिक सन्त के अनुसार सांसारिक मोह-माया से मुक्ति ही स्वतंत्रता है। परतंत्र देश के निवासी स्वतंत्रता को स्वराज्य का पर्यायवाची समझते हैं। व्यवहार में प्रचलित स्वतंत्र के उपर्युक्त विविध अर्थों में कोई भी अर्थ पूर्ण नहीं है।

'स्वतंत्रता' अंग्रेजी के शब्द 'Liberty' का हिन्दी रूपान्तर है। 'Liberty' की उत्पत्ति लैटिन भाषा के 'Liber' से हुई है, जिसका अर्थ होता है 'बन्धनों का अभाव', किन्तु इसे स्वीकार नहीं किया जा सकता। चूँकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और समाज में रहते हुए वह असीमित स्वतंत्रता का उपभोग कर ही नहीं सकता। उसे सामाजिक नियमों की मर्यादा के अन्तर्गत रहना होता है।

उपर्युक्त विवेचनाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि स्वतंत्रता मानवीय प्रकृति और सामाजिक जीवन के इन दो विरोधी तत्वों (बन्धनों का अभाव और नियमों के पालन) में सामंजस्य का नाम है एवं परिभाषा इस प्रकार दिया जा सकता है

Next

Scanned with CamScanner

Date: _____ Page: _____

" स्वतंत्रता व्यक्ति की अपनी इच्छानुसार कार्य करने की शक्ति का नाम है बशर्ते कि इस से दूसरे व्यक्ति की इसी प्रकार की स्वतंत्रता में कोई बाधा न पहुँचे।"

विभिन्न विद्वानों ने स्वतंत्रता को अपने-अपने ढंग से परिभाषित करने का प्रयास किया है, उनमें कुछ प्रमुख इस प्रकार है—

(i) सीले के अनुसार,
" स्वतंत्रता, अतिशासन का विलोम है।"

(ii) जे० एस० मिल के अनुसार,
" स्वतंत्रता प्रतिबंधों का अभाव है। प्रतिबंधों के रूप में हर प्रतिबंध दोष है और लोगों को नियंत्रित करने से बेहतर उन्हें अपनी इच्छा पर छोड़ देना है।"

(iii) मैकेंजी के अनुसार,
" स्वतंत्रता सभी प्रतिबंधों का अभाव नहीं, बल्कि अतार्किक प्रतिबंधों का अभाव है।"

(iv) प्रो० लॉस्की के अनुसार,
" स्वतंत्रता से मेरा अभिप्राय यह है कि उन सामाजिक परिस्थितियों के अस्तित्व पर प्रतिबंध न हो, जो आधुनिक सभ्यता में मनुष्य के सुख के लिए नितांत आवश्यक है।"

(v) टी० एच० ग्रीन के अनुसार,
" जिस प्रकार सौन्दर्य कुरूपता के अभाव का नाम नहीं होता, उसी प्रकार स्वतंत्रता प्रतिबंधों का अभाव का नाम नहीं है।"

Scanned with CamScanner

Date: _____ Page: _____

वर्णित विवेचना से स्वतंत्रता के दो तत्व उभर कर आते हैं- (i) न्यूनतम प्रतिबंध (ii) व्यक्तित्व के विकास हेतु सुविधाएँ इन्हीं तत्वों के आधार पर स्वतंत्रता की परिभाषा इस प्रकार दिया जा सकता है—

"स्वतंत्रता जीवन की ऐसी अवस्था का नाम है जिसमें व्यक्ति के जीवन पर न्यूनतम प्रतिबंध हो और व्यक्ति को अपने व्यक्तित्व के विकास हेतु अधिकतम सुविधाएँ प्राप्त हों।"

× × × ×

संभावित प्रश्न :

स्वतंत्रता की धारणा की पूर्ण स्पष्टता के साथ व्याख्या कीजिए।

× × × × ×

By; OM KUMAR SINGH,
Assistant Professor
Deptt. of Pol. Sc.

Scanned with CamScanner